AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक विकास में शिक्षा की भूमिका

ORIGINAL ARTICLE

Author
डॉ. ममता सिरमौर वर्मा
एम.ए., एम.फिल., पी.एचडी., सेट (समाजशास्त्र),
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

शोध सार

भारत में महिला शिक्षा का इतिहास प्राचीन वैदिक काल से जुड़ा हुआ है। उल्लेखनीय है कि लगभग 3000 से अधिक वर्ष पूर्व वैदिक काल के दौरान महिलाओं को समाज में एक प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त था और उन्हें पुरुषों के समान समाज का एक महत्वपूर्ण अंग समझा जाता था। ब्रिटिश इंडिया काल में पहला ऑल–गर्ल्स बोर्डिंग स्कूल वर्ष 1821 में दक्षिण भारत के तिरुनेलवेली में स्थापित किया गया था। वर्ष 1840 तक स्कॉटिश चर्च सोसाइटी द्वारा दक्षिण भारत में निर्मित 06 स्कूल मौजूद थे जिनमें कुल 200 लड़कियों का नामांकन कराया गया था। वर्ष 1848 में पुणे में ज्योतिबा फूले एवं सावित्रीबाई फूले ने पुणे में प्रथम गर्ल्स स्कूल की स्थापना की। मद्रास मिशनरियों ने 1850 में स्कूल में लगभग 8000 से अधिक लड़कियों का नामांकन कार्य किया था। वर्ष 1848 में पुणे में ज्योतिबा फूले एवं सावित्रीबाई फूले ने पुणे में प्रथम गर्ल्स स्कूल की स्थापना की। मद्रास मिशनरियों ने 1850 में स्कूल में लगभग 8000 से अधिक लड़कियों का नामांकन कार्य था। ईस्ट इंडिया कंपनी के कार्यक्रम वुड्स डिस्पैच ने वर्ष 1854 में महिलाओं की शिक्षा और उनके लिए रोजगार की आवश्यकता को स्वीकार किया । वर्ष 1879 में स्थापित बेथ्यून कॉलेज वर्तमान में एशिया का सबसे पुराना महिला कॉलेज है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् प्रथम पंचवर्षीय योजना से महिला शिक्षा पर ध्यान केंद्रित किया गया। जनगणना 1951 के अनुसार भारत में महिला साक्षरता दर 9 प्रतिशत था जिसे उन्नत करने का लक्ष्य रखा गया। यही कारण है की 2011 की जनगणना अनुसार भारत में महिला शिक्षा का प्रतिशत बढ़कर 65 प्रतिशत हुआ है। आज महिलाएं शिक्षित होकर सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक विकास में अपना योगदान दे रहीं हैं। इस शोध आलेख में महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक विकास में शिक्षा की भूमिका को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत शोध आलेख द्वितीयक डाटा पर आधारित है। द्वितीयक डाटा का सारणीयन, विश्लेषण एवं प्रस्तुतीकरण कर तथ्यों को समझने का प्रयास किया गया है। द्वितीयक डाटा से प्राप्त आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि महिलाएं आज सामाजिक संस्थाओं के अध्यक्ष, सदस्य एवं सचिव के साथ अपने बच्चों के समाजीकरण के माध्यम से समाज का विकास कर रही हैं। ये अब परिवार के सभी प्रकार के कार्यों में अपनी सहभागिता सुनिश्चित कर रहीं हैं। पुरुष वर्ग द्वारा प्रत्येक कार्यों में महिलाओं से सहमति ली जा रही है। महिलाओं को अब प्रत्येक प्रकार के सरकारी एवं निजी क्षेत्रों में कार्य करते हुए देखा जा सकता है। महिलाएं अब पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रही हैं। भारत सरकार के त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था एवं संवैधानिक प्रावधानों के जरिये महिलाएं अब सरपंच, पंच, सचिव, पार्षद, महापौर और यहाँ तक की संसद एवं विधानसभाओं के सदस्य के रूप में सामने आ रही हैं। इस प्रकार शिक्षा ने महिलाओं का सर्वांगीण विकास किया है।

मुख्य शब्द

महिला, शिक्षा, विकास, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक.

प्रस्तावना

स्त्री शक्ति राष्ट्र शक्ति का अभिन्न अंग होती है जिसे सशक्त और शामिल किये बिना कोई भी राष्ट्र शक्तिशाली नहीं हो सकता। शिक्षित महिला न केवल स्वयं लाभान्वित होती है, वरन उससे भावी पीढ़ी भी लाभान्वित होती है। शिक्षा किसी भी प्रकार के कौशल की प्राप्ति एवं विवेकपूर्ण दृष्टिकोण के विकास के लिए पूर्णतया आवश्यक है। ''किसी भी समाज या राष्ट्र की प्रगति के लिए महिला शिक्षा का विशेष महत्व है। किसी भी शिक्षित समाज की वास्तविक स्थिति जानने का तरीका है कि हम यह जानने का प्रयास करें कि समाज में महिलाओं की शैक्षिक स्थिति कैसी है, उनको क्या–क्या अधिकार प्राप्त हुए हैं और उनकी मूलभूत संसाधनों तक कितनी पहुँच है तथा राजनीतिक व सामाजिक निर्णय निर्माण की प्रक्रिया में उनकी कितनी सहभागिता है? देखा जाय तो महिलाओं की शिक्षा विकास का एक महत्वपूर्ण कारक है जिसने महिलाओं का स्तर और उनकी समाज में भूमिका को उठाने में सहायता की है।'' सामान्य तौर पर शिक्षा आर्थिक आत्मनिर्भरता में सहायक होती है। इससे महिलाओं का सामाजिक स्तर ऊपर उठता है।

शिक्षा चाहे पुस्तकीय ज्ञान से संबंधित हो, चाहे लोक ज्ञान, कृतियों और प्रथाओं के रूप में दी जाती हो अथवा यह परिवार के दैनिक कार्य के विषय में हो, हम उस संपूर्ण ज्ञान को शिक्षा के अंतर्गत सम्मिलित करते हैं। वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति बहुत अच्छी थी। डॉक्टर राधाकुमुद लिखते हैं कि ऋग्वेद ने उस समय की योग्य स्त्रियों के लिए उच्चतम सामाजिक स्थिति प्रदान की थी।

शिक्षा के द्वारा ही महिलाएँ प्राचीन समय की अच्छाइयों बुराइयों से लेकर नये समाज से संबंधित कुरीतियों, अंधविश्वास से हट कर नये समाज के निर्माण में सहयोग दे रही है, यही कारण है कि आज की नारी पुरानी परंपराओं से दूर होती जा रही है। आज गांवों में भी आधुनिकता दिखाई पड़ रही है जिसके प्रभाव के कारण आज महिलाएँ स्कूल, कॉलेज, बैंक, अस्पताल, आफिस में स्वयं जाकर अपना कार्य कर रही है और आत्मनिर्भर होती जा रही है।

किसी भी देश के विकास संबंधी सूचकांक को निर्धारित करने हेतु उद्योग, व्यापार, खाद्यान्न उपलब्धता, शिक्षा इत्यादि के स्तर के साथ ही इस देश की महिलाओं की स्थिति का भी अध्ययन किया जाता है। नारी की सुदृढ़ एवं सम्मानजनक स्थिति एक उन्नत, समृद्ध तथा मजबूत समाज की द्योतक है। शिक्षा एवं आर्थिक स्वतंत्रता ने महिलाओं में नवीन चेतना भर दी है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका में वृद्धि हो रही है। आज महिलाएँ राजनीति, बिजनेस, कला तथा खेल सहित रक्षा क्षेत्र में भी नए आयाम गढ़ रही हैं। सेना जैसे संवेदनशील क्षेत्र में भी महिलाएँ अपनी भूमिका का पुरुषों के साथ कदम मिलाकर निवर्हन कर रही हैं। हाल ही में अवनी चतुर्वेदी सहित तीन लड़कियों को वायुसेना में फाइटर प्लेन उड़ाने की अनुमति प्रदान की गई है।

महिलाओं की शिक्षा पर ध्यान देते हुए विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948) के ऐतिहासिक शब्द भी ध्यान देने योग्य हैं–''शिक्षित स्त्री के बिना शिक्षित पुरूष हो ही नहीं सकता।'' यदि पुरूषों और स्त्रियों में से केवल एक के लिए सामान्य शिक्षा का प्रावधान करना हो तो यह अवसर स्त्रियों को दिया जाना चाहिए क्योंकि यह शिक्षा स्वमेव अगली पीढ़ी को प्राप्त हो जाएगी।'' सन् 1963 के वनस्थली विद्यापीठ में भाषण देते हुए पं. जवाहर लाल नेहरू ने भी इसी तथ्य को दोहराया था कि ''लड़के की शिक्षा केवल एक व्यक्ति की शिक्षा है, परन्तु एक लड़की की शिक्षा पूरे परिवार की शिक्षा है।'' उपरोक्त विवेचन से महिलाओं की शिक्षा की आवश्यकता स्पष्ट होती है, लेकिन स्त्री शिक्षा इतनी आवश्यक होते हुए भी उपेक्षित है। कानूनी एवं संवैधानिक अधिकार प्राप्त होने के बाजवूद महिलाओं की स्थिति सोचनीय है। शैक्षिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक आदि दृष्टियों से महिलाएँ अभी भी पिछड़ी हुई है। स्वामी विवेकानन्द के कथनानुसार ''कोई राष्ट्र तब तक अपना पूर्ण विकास नहीं कर सकता जब तक उसका प्रत्येक नागरिक राष्ट्र के विकास में भागीदार नहीं बनता।''

महिला उत्थान में शिक्षा ने अहम् भूमिका अदा की। शिक्षा में महिलाओं के स्वतंत्र व्यक्तित्व तथा राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ। आज महिला हर क्षेत्र में पुरूष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है। शिक्षा के विकास से महिलाओं में जो जागृति आई है, उसी के परिणामस्वरूप उन्होंने आर्थिक क्षेत्र में पदार्पण किया है।

उद्देश्य

महिला शिक्षा देश के विकास के लिए सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि वे रचनाकार होती है। यदि उन्हें शिक्षित करें शक्तिशाली बनाएँ, प्रोत्साहित करें तो यह देश के लिए अच्छा है। राष्ट्रीय नीति का लक्ष्य महिलाओं की उन्नति, विकास और सशक्तिकरण सुनिश्चित करना है। उसके उद्देश्य में महिलाओं के विकास के लिए साकारात्मक आर्थिक एवं सामाजिक नीतियों के माध्यम से ऐसा अनुकूल माहौल तैयार करना है जिससे महिलाएँ अपनी क्षमता को साकार कर सकें तथा स्वास्थ्य देखभाल, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, रोजगार, समान पारिश्रमिक एवं सामाजिक सुरक्षा का लाभ उठा सके तथा सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे सके।

भारतीय नारी के परिप्रेक्ष्य में बींसवी सदी के आखिरी पाँच दशक खास महत्त्व रखता है। शिक्षा के प्रसार के साथ ही व्यापक साक्षरता आन्दोलन, सूचना प्राद्यौगिकी और संचार माध्यमों में आयी क्रान्ति के तहत भारतीय नारी समाज में भी सजगता आयी। इस माहौल में पहले की अपेक्षा भारत की महिलाएँ मतदान का अधिकार जिम्मेदारी के साथ सार्थक रूप में निभाती है। महिला प्रतिनिधि पंचायत स्तर से लेकर संसद तक महिलावर्ग के अधिकार के लिए आवाज उठाने में सक्षम है। कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जहाँ नारी न पहुँची हो। भारतीय नारियों ने विमान चलाने से लेकर शून्याधरा की यात्रा तक में सफलता हासिल की है। सक्रिय राजनीति, कुशल प्रशासन, वाणिज्य प्रबंधन, सूचना प्रोद्यौगिकी और शेयर बाजार जैसी उद्यमिता की दिशा में भी उन्होंने अपनी विशिष्ट क्षमताओं का परिचय पूरे विश्व को दिया है।

यह महिलाओं की कार्यक्षमता का द्योतक है, क्योंकि प्रायः कमजोर समझी जाने वाली महिलाएँ आज कठिन माने जाने वाले क्षेत्रों में भी अपनी क्षमता का प्रदर्शन कर रही हैं। गांधी जी ने कहा था कि ''महिलाएँ पुरुषों से बेहतर सैनिक साबित हो सकती हैं। बस उनको मौका देने की जरूरत है।'' कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स, टेंसी थॉमस, अवनी चतुर्वेदी जैसी अनेक नारियाँ आज समाज में महिलाओं की मजबूत छवि प्रस्तुत कर रही हैं। अग्नि–पांच मिसाइल के विकास में प्रमुख भूमिका निभाने वाली टेंसी थॉमस को 'मिसाइल वुमेन' के नाम से जाना जाता है।

महिलाएँ न केवल सामान्य शिक्षा, विश्वविद्यालय तथा कालेजों मे ही जा रही है बल्कि मुख्यमंत्री, राज्यपाल, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति बन रही है, एवरेस्ट पर विजय प्राप्त कर रही हैं, वायु सेना और नौ सेना में अपनी सेवा प्रदान कर रही है।

सामाजिक विकास के क्षेत्र में महिलाओं के व्यक्तिगत योगदान को पहचान देने के लिए केंद्र सरकार ने स्त्री शक्ति के नाम से पांच राष्ट्रीय पुरस्कारों की स्थापना की है। यह पुरस्कार भारतीय इतिहास को सम्मानित महिलाओं के नाम पर रखे गए हैं, जो अपने साहस और एकता के लिए विख्यात हैं, जैसे– देवी अहिल्याबाई होल्कर, कन्नगी, माता जीजाबाई, रानी गिडेनेलु जेलियांग, रानी लक्ष्मीबाई आदि।

देश के कई आर्थिक संस्थानों के शीर्ष पदों पर महिलाएँ कार्यभार संभाल रही हैं तथा देश के विकास में अपना योगदान दे रही हैं। अरुंधति महाचार्य, शिखा शर्मा, नैनालाल किदवई, सावित्री जिंदल आदि आर्थिक क्षेत्र में शीर्ष पदों पर काबिज हैं। भारत के संबंध में कई बार विश्व बैंक ग्रुप आदि ने कहा है कि अगर यहाँ पर महिलाओं की आर्थिक भागीदारी में वृद्धि की जाए तो भारत की विकास दर में तीव्र वृद्धि हो सकती है। गौरतलब है कि 1994 से 2012 के मध्य कई लाख भारतीय गरीबी रेखा से बाहर निकल चुके हैं। इन आँकड़ों में और बढ़ोतरी होती अगर कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी में और इजाफा होता। 2012 में सिर्फ 27 प्रतिशत वयस्क भारतीय महिलाएँ विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत थीं। एक ओर जहॉ केन्द्र व राज्यों की सरकारें महिला उत्थान की नई–नई योजनायें बनाने लगीं है। वहीं कई गैर सरकारी संगठन भी उनके अधिकारों के लिये उनकी आवाज बुलन्द करने लगें है। महिला में ऐसी प्रबल भावना को उजागर करने का प्रयास भी किया जा रहा है कि वह अपने अन्दर छिपी ताकत को सामने

लाकर बिना किसी सहारे के आने वाली हर चुनौती का सामना कर सकें।

महिलाओं की भूमिका राजनीति में मजबूत होती जा रही है। शिक्षा, स्वास्थ्य, खेलकूद, कानून, अभियांत्रिकी, प्रबंधन के साथ–साथ राजनीति के क्षेत्र में भी महिलाए आगे आ रही है और अपनी स्थिति को सुधारने के प्रयास में लगी हुई है। महिलाओं की राजनीतिक स्थिति को आज समाज की स्थिति के विकास के एक निर्धारक के रूप में स्वीकार किया जाता है क्योंकि महिलाएं प्रत्यक्षतः तथा अप्रत्यक्षतः राजनीतिक क्रियाओं में योगदान देती है। वह समस्त पारिवारिक दायित्वों को बोझ उठाकर पुरूषों को केवल राजनीतिक क्रियाएं सम्पादित करने का पूरा समय व अवसर प्रदान करती हैं अथवा स्वयः भी पारिवारिक उत्तरदायित्वों का निर्वाह करने के साथ–साथ पुरूषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर राजनीतिक क्रियाओं में संलग्न होती है। आज भागीदारी की दृष्टि से कृषि, पशु व्यवसाय, हैण्डलूम आदि में महिलाओं के अनुपात में काफी सीमा तक वृद्धि हुई है। पिछले दशक में महिलाओं की क्रियाओं से सम्बन्धित नये आयाम उभरकर सामने आये है।

भारत में लगभग 15 वर्षों के लिए देश की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी थी। भारत की पहली महिला राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल और विदेशमंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज, लोकसभा अध्यक्ष सुमित्रा महाजन, रक्षामंत्री निर्मला सीतारमण जी, सूचना और प्रसारण मंत्री स्मृति ईरानी, कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी, राजस्थान की मुख्यमंत्री सुश्री वसुंधरा राजे सिंधिया, पश्चिम बंगाल की वर्तमान मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को किसी भी परिचय की आवश्यकता नहीं है। उन्होंने आधुनिक भारत की राजनीति में प्रमुख और निर्णायक भूमिका निभायी हैं।

निष्कर्ष

जैसे–जैसे महिलाओं का शिक्षा की ओर रूझान बढ़ा है अर्थात् वे शिक्षित हुई हैं, वैसे–वैसे वे सभी सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक क्षेत्र में भी सुदृढ़ हुई है तथा आत्मनिर्भर बनी हैं। आज ऐसा कोई क्षेत्र नही जहां महिलाओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज न कराई हो। राष्ट्र के विकास की अग्रदूत बनी महिलाओं द्वारा देश ही नही वरन् विदेशों में भी अपने राष्ट्र का परचम लहराया है, यह सब अथक प्रयासों के द्वारा धीरे–धीरे संभव हो पाया है। महिलाएं समाज का अनिवार्य अंग है। सामाजिक, आर्थिक क्षेत्र के साथ–साथ राजनीति के क्षेत्र में उनकी अहम भूमिका है। जैसे–जैसे शहरों के साथ ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं में राजनीति जागरूकता आ रही है। शिक्षा के प्रचार–प्रसार और बदलते सामाजिक परिवेश में राजनीति में महिलाएँ आगे आ रही है और केन्द्रीय, प्रान्तीय, स्थानीय शासन में अपनी भागीदारी निभा रही है इसलिये महिलाओ को सशक्त और सुदृढ़ बनाने पर ही समाज सुदृढ़ होगा। महिलाओं को सुदृढ़ करने के लिये उनका शिक्षित होना आवश्यक है ताकि अपने अधिकारों को समझ कर समाज एवं राष्ट्र का विकास कर सके।

भारत की आर्थिक–सामाजिक प्रगति उसके महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक प्रगति पर निर्भर करती है। इक्कीसवीं सदी की शुरुआत में देर सवेर सभी राज्य सरकारों में महिला प्रतिनिधित्व को स्थानीय स्वशासन में स्वीकारा है तथा ''यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता'' की देववाणी को अंगीकार करते हुए त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी को सुनिश्चित किया है।

संदर्भ सूची

1. कर्वे, इरावती, (1953) *किनशिप आर्गनाएजेशन इन इंडिया,* दक्कन कॉलेज रिसर्च इंस्टीट्यूट, पुणे।
2. मुखर्जी, राधाकुमुद, (1958) *वूमेन ऑफ इंडिया,* गवर्नमेंट ऑफ इंडिया पब्लिकेशन।
3. *कुरुक्षेत्र,* मार्च 2002 पृष्ठ 23
4. राजेंद्र प्रसाद गुप्त, (1963) *स्वामी विवेकानंद व्यक्ति और समाज,* राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली पृष्ठ 13
5. सिंह, रमा, (1988) *शिक्षित हिन्दु महिलाएं एवं धर्म,* नई दिल्ली, पृष्ठ 51।
6. जैन, पी सी एवं नरेन्द्र कुमार, (1997) *ग्रामीण एवं नगरीय समाजशास्त्र,* विशाल प्रकाशन मंदिर, पृष्ठ 128।

––==00==––